रविवार, दिनाँक **06-08-2023** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

मन नूं भावन जी, मन नूं भावन जी रघुनाथ जी दे सांवले चरण।।

शिव ब्रह्मा तुहाडा ध्यान लगावे, महाबीर जी चरणां विच बाहवन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

कोई गावे कोई ताल बजावे, नारद जी बीन बजावन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

कोई जंगलां विच धूनियां लावे, कोई सिर ते जटा वधावन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

कोई जावे गंगा कोई जावे जमना, कोई चारे धाम पये धावन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

काम क्रोध नू भैणां परे हटाओ, रघुनाथ जी सांवले चरण दिखावन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

मैं दासी तुहाडे चरणां दी प्यारी, ए चरण हृदय विच राहवन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

सजनों यह प्रीत सबसे सुन्दर है। जिसके मन को यह आत्मविचार भा जाते हैं, वही हक़ीकत में इस जीवन का आनन्द माण सकता है। पालना के दौरान जो माता-पिता अपने बच्चों को सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित इन आत्मविचारों से सींचते हैं, उन्हीं का जीवन परमार्थ के मार्ग पर अग्रसर हो पाता है और वही त्याग भावना दर्शा कर अपने व सबके सजन बन पाते हैं। इसके विपरीत जो माता पिता अपने बच्चों को नास्तिकता का पाठ पढ़ाते हैं व नकारात्मकता से सींचते हुए आडम्बरयुक्त भक्ति भाव में फँसाते हैं, वे दुर्मति

इन्सान अपने लिए, अपने परिवार वालों के लिए व अपने संगी-साथियों के लिए दुःख का कारण बनते हैं। आशय यह है कि पालना के दोष के कारण ही इन्सान आप दुखी रहता है व सबको दुःख बाँटता है। आप ही बताओ कि जो इन्सान खुद ही प्रसन्न नहीं रह सकता, वह दूसरों को हँसता खेलता हुआ कैसे देख सकता है? इस दुनियाँ में यही अजब-गजब खेल तमाशा चल रहा है और इस तमाशे के अन्तर्गत इन्सान अपने आपको अच्छा साबित करने के लिए इधर की उधर लगा व उधर की इधर लगाकर झूठ का आडम्बर रचता है और लड़ाई झगड़े व तोड़-फोड़ करवाता है। इस तरह वह दूसरों का वैरी बनने के साथ-साथ खुद का वैरी भी हो जाता है। यकीन मानो ऐसा करने के लिए वह इन्सान जो-जो भी नकारात्मक खेल खेलता है, वह अपने आप में अत्यन्त कष्टदायक होता है। इस बात से शिक्षा लेकर सजनों आपने अपने परिवारों की व आने वाली संतति की पालना युक्तिसंगत इस तरह से करो कि वे बड़े होकर सजनता के प्रतीक बने।

इस सन्दर्भ में जिनकी स्वाभाविक बनत अब तक नकारात्मक बन चुकी है, उनके लिए तो सुधरना नामुमकिन सी बात लगती है क्योंकि ऐसे बिगड़े हुए सजन अपने अवगुणों को भी गुण समझते हैं और उनके प्रयोग द्वारा सब में बिगड़ाव पैदा करते हैं। उन्हें यह कभी नहीं लगता कि हमने कुछ गलत किया है। चाहे उन्हें कितना ही समझा लो पर फिर भी वे अपने आप को ही ठीक समझते हैं। अब जिसके अन्दर मज़बूती से इतना नकारात्मक वातावरण घर कर गया हो उसका सुधरना तो नामुमकिन है। इस से स्पष्टतः प्रतीत होता है कि पालन कर्त्ताओं की अनुचित परवरिश के कारण घर, परिवार व समाज का कितना बड़ा नुक्सान हो जाता है। ऐसे इन्सान ही रोते-झुखते हैं और अपने लिए व सबके लिए तमाशे का विषय बनते हैं। अतः सजनों अगर सुधरना चाहते हो तो यह चलन आपको छोड़ना होगा।

यहाँ सजनों हम आपको एक ऐसे सजन का उदाहरण देते हैं जिसका कुछ दिन पहले हमें फोन आया और उसने कहा कि हमारे बच्चे हमारी बात नहीं सुनते अपितु बहस करते हैं अतः आप उनका कुछ हल कीजिए। हमने उन्हें कहा कि कुछ दिन पहले सावन की मीटिंग वाले दिन हमने बच्चों की पालना युक्ति संगत कैसे करनी है, वह तरीका बताया था। आप उस सबक़ को पढ़ो और अपनी जाँचना सत्यता से करो। माता-पिता ने कहना माना और उस युक्ति को अच्छे से पढ़ने व समझने के बाद हमें फोन किया कि सजन जी, इस पाठ

को पढ़कर हमें ज्ञात हो गया कि यह हमारी पालना की कमी ही है जिसके कारण हमारे बच्चे हमारे से बहसते हैं और हमारा कहना नहीं मानते। इस तरह सजनों उन माता-पिता ने अपनी गलती को स्वीकारा और समझने की कोशिश की कि हमारी किस भूल के कारण बच्चों का स्वभाव नकारात्मक हो गया है और वे हमारे सामने उल्टा-पुल्टा बोलते हैं व हमारी बात नहीं सुनते। कहने का आशय यह है कि जब तक हम अपनी गलती नहीं स्वीकारते यानि अपनी कमियों पर नज़र नहीं डालते तब तक हम अपने बच्चों को कैसे सुधार सकते हैं?

इस बात के दृष्टिगत सजनों अपने हित के लिए अपनी कमियों पर नज़र डालो और दूसरों को दुःख देना छोड़ दो। जानो दूसरों को दुःख देना पाप है और इस पापकर्म का परिणाम कभी भी अच्छा नहीं निकलता। फिर सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे से जुड़ा हुआ इन्सान यदि ऐसी गलती करे तो बहुत कष्ट होता है। मान लो ऐसा करने से उसका जीवन कभी भी सुखमय नहीं हो सकता क्योंकि उसको सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग प्राप्त नहीं होता। इसी कारण उसका संकल्प कुसंगी हो जाता है जो अपने आप में अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण बात होती है। ऐसे इन्सान की बुद्धि की हालत बताते हुए सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ क्या कह रहा है, वह अब ध्यान से सुनोः-

श्री साजन जी पब्लिक को समझौता दे रहे हैं

(श्री रघुनाथ जी के मुख के शब्द)

शब्दः- जैंदी बुद्धि होई ए करूर मारिया वैसी, अन्धेरा हटना है जरूर मारिया वैसी।

रघुवर जी कोलों पहुंचो जरूर जन्म सफल बनैसी।।

चौपाई

राम नाम दी लवो दवाई। बुद्धि दी तुसी करो सफ़ाई।।

तिन खुराकां पीवो जरूर। तिन खुराकां पीवो जरूर।।

जन्म अपने नाल वैर न कमावीं। जन्म अपना सफ़ल बनावीं।।

तन मन अर्पण करो जरूर। तन मन अर्पण करो जरूर।।

द्वापर हटे कलुकाल आसी। जन्म अपने नूं ना लांवी फांसी।।

चौरासी भुगतनी पैसी ज़रूर। चौरासी भुगतनी पैसी ज़रूर।।

जे चौरासी दा हेई हुण डर। पहुंच रघुनाथ प्यारे दे घर।।

ओ दयालु तैनूं बचैसी। ओ दयालु तैनूं बचैसी।।

जन्म अपना सफल बनावो। इस दुनियां ते रौशन हो जावो।।

चानणा देखसी ओ ज़रूर। चानणा देखसी ओ ज़रूर।।

सजनों इस कीर्तन के अन्तर्गत क्रूर बुद्धि इन्सानों की मनोदशा का वर्णन किया गया है। यहाँ प्रश्न यह उठता है कि क्रूरता आती कहाँ से है? जान लो इसका कारण माता-पिता ही होते हैं क्योंकि माता-पिता के सोच विचार, बात-चीत, उठने-बैठने का यानि आचार-विचार व व्यवहार का तरीका देखकर ही बच्चे तद्नुसार सब ग्रहण करते हैं। इस विषय में यदि परिवार में क्रूरता का चलन चलता है तो उससे एक तो इन्सान का खानपीन यानि आहार प्रभावित होता है और इन्सान कई दफा नशीले पदार्थों का सेवन करना आरम्भ कर देता है, दूसरा इस द्वारा इन्सान के विचार व आचार-व्यवहार का तरीका दूषित हो जाता है। इन दोनों के प्रभाववश भयावह परिणाम निकलते हैं। सजनों आपको अपने जीवन की वास्तविक हालत से ऐसा प्रतीत भी हो रहा होगा। जान लो यह इन्सान की नैतिक पतनता का द्योतक है। ऐसे अधर्मी इन्सान कदापि मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकते इसीलिए शास्त्र में कहा गया है कि अन्ततः ऐसे इन्सान मारे जाते हैं। जानते हो कि इस अवस्था में इन्सान को कितनी पीड़ा होती है? दुःखों की मार से ऐसे इन्सान हड़बड़ा जाते हैं और छोटे-बड़े का सवाल भी खत्म कर देते हैं। सारी नीतियाँ तब एक तरफ हो जाती हैं और अनीतिपूर्ण चलन अन्तर्मन में घर कर जाता है। ज्ञात हो कि यह अनीतिपूर्ण चलन ही इन्सान को दिन-रात मनसिक रूप से तोड़ता है। अब जब इन्सान स्वयं टूटता है तो फिर वह कभी भी किसी को हँसता-खेलता बर्दाश्त नहीं कर पाता। यही कारण है कि वह फिर दूसरों को तोड़ने के लिए तरह-तरह के आडम्बर रचता है। ऐसे में अपना-पराया, बड़ा-छोटा उसके लिए कोई भी मायने नहीं रखता। तब तो बहुत ही भयंकर खेल चलता है। आज कलियुग में जगह-जगह यही

कुछ हो रहा है। इसी खेल को दृष्टिगत रखते हुए ही सजनों यह कीर्तन आपके समक्ष बोला गया है। हो सकता है कि इस कुदरत की वाणी को सुनकर आपके अन्दर स्वाभाविक सुधार कर यानि शारीरिक स्वभावों से ऊपर उठकर आत्मीयतायुक्त स्वभाव अपनाने की उमंग पैदा हो जाए और आप आत्मानन्द का अनुभव कर अपना जीवन बनाने में सफल हो जाओ। इस सन्दर्भ में हम तो यही कहेंगे कि अगर आपको अपने जीवन से ज़रा सा भी प्यार है तो औरों को छोड़ो, कम से कम अपने तो सजन बन जाओ।

इसके लिए स्वाभाविक तौर पर सम्भलना बहुत आवश्यक है। सजनों यदि सम्भलना चाहते हो तो बेवजह दूसरों की बातों में दखल देना बन्द कर दो यानि दूसरों के घरों में आग लगाकर तमाशा देखने का स्वभाव छोड़ दो। याद रखो सत्य तो सत्य है, वह एक न एक दिन प्रगट हो ही जाता है। आशय यह है कि सत्य के प्रकाश में यह खेल नहीं चल सकता अतः यह भूल कोई भी कभी भी मत करना। याद रखना कि सत्य की हर युग में जीत होती है और इसके विपरीत जो भी झूठ आधारित भाव-स्वभाव अपनाता है उसकी हार ही हार होती है। इस विषय में सारे सजन भली-भान्ति विचार कर लेना और स्मरण रखना कि आप सब, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी दे द्वारे पर हैं। हम यह नहीं कह रहे कि आप द्वारे के सेवक हो क्योंकि अधिकतर सजनों में सेव्य भाव नज़र ही नहीं आता। कोई विरला ही इस भाव के अनुकूल वर्ताव दर्शा रहा है। यहाँ ज्ञात हो कि सेवक वही होता है जिसमें सेवा का भाव हो और जो मान-अपमान में सम रहने की सामर्थ्य रखता हो। ऐसा सजन कभी भी सेवा-भाव से विचलित नहीं होता। इसके विपरीत भाव-स्वभाव दर्शाने वाला तो मनमत के अनुकूल चलता है। ऐसा सजन आज सेवा करता है, कल हट जाता है यानि अपनी ड्यूटी पर परिपक्व नहीं होता। यही कलुकाल की हालत है। आप ऐसा करके अपने ही वैरी मत बनना। आपको तो अपने जन्म का सजन बनना है और इस हेतु सत्य-धर्म का निष्काम रास्ता अपनाना है। इस रास्ते को अपनाने से आपके जीवन का अन्त परिणाम बदल सकता है यानि मृत्यु के स्थान पर मोक्ष प्राप्त हो सकता है। अब चाहो तो अपना जीवन बना लो या फिर जो बना हुआ है उसके अनुसार कर्मफल भुगतने के लिए तैयार हो जाओ। अब ध्यान से सुनो कि कलुकाल के धोखे में आकर इन्सान कैसे अपना-पराया, बड़ा-छोटा सब भूलकर धोखेबाज़ बन जाता है? कैसे उसकी ही 'मैं' उस पर हावी हो जाती है और वह 'मैं' तुल्य किसी को नहीं समझता। इस बात को इस कीर्तन द्वारा ध्यान से समझना और फिर खुद को सुधारने का संकल्प लेकर सकारात्मक वातावरण का निर्माण

करना। फिर कह रहे हैं कि समय को समझते हुए कलुकाल के घेरे से अपनी बुद्धियों को बाहर निकालने के लिए अब तैयार हो जाओ और ध्यान से सुनोः-

भजन बन्दगी इन्सान भुल के ते भुल गये स्वरूप हमारा

सच्चाई धर्म दे दो मन्त्र भुल गये न डिट्ठा प्रतिबिम्ब दा नज़ारा

विपत्ति खरीद लई ओन्हां ने हो गये आपस विच शिकारी

ओ हो हो हो हो गये आपस विच शिकारी

कलुकाल, कलुकाल ने पाया घेरा, जीवां ने पाप किया बहुतेरा

जीवां ने पाप किया बहुतेरा आ हिलया है जे सिंहासन मेरा

इन्सान दी हालत नूं देखो, कैसी ओ बिगड़ी जांदी है

इक मां दे दो पुत्र पये लड़दे ने, माता घबराई जांदी है

लालच बुरी बला ओ लालच बुरी बला, सजनों लालच बुरी बला

कई जीवां दा करे ओ ख़ात्मा, लालच करे तबाह हां हां लालच करे तबाह

कलुकाल, कलुकाल ने पाया घेरा, जीवां ने पाप किया बहुतेरा

जीवां ने पाप किया बहुतेरा आ हिलया है जे सिंहासन मेरा

पाप हटाना है सजनों, धर्म बचाना है ओ बचाना है

ओ पाप हटाना है, धर्म बचाना है ओ बचाना है

कलुकाल हटाना है, ओ सजनों सतवस्तु आना है

उत्पात आने वाला है होसीया अत्याचार

भाई भाईयां नूं मारन गे हथियार करन प्रहार, सजन जी हथियार करन प्रहार

कलुकाल, कलुकाल ने पाया घेरा, जीवां ने पाप किया बहुतेरा

जीवां ने पाप किया बहुतेरा आ हिलया है जे सिंहासन मेरा

वक्त है अखीरी छडो कलुकाल दियाँ कुरीतियाँ, कलुकाल दियाँ कुरीतियाँ

मनुं हटा दियो कलुकाल दीयाँ यादगीरियां, कलुकाल दीयाँ यादगीरियां

खलबली होई है, होनी ए बे-शुमार, कई माईयां दे लाल मरनगे

स्त्रियां रोसन ज़ारो ज़ार, सजन जी ओ रोसन ज़ारो ज़ार

कलुकाल, कलुकाल ने पाया घेरा, जीवां ने पाप किया बहुतेरा

जीवां ने पाप किया बहुतेरा आ हिलया है जे सिंहासन मेरा

थोड़े दिनां दे अन्दर परलो होसी, सृष्टि होनी है खाली

सतवस्तु दा वाली ओ राज करेगा, ओहदी कैसी है चाल निराली

सजनों ओहदी कैसी है चाल निराली

कर्मां अनुसार सृष्टि उपजे बिनसे, कर्मां अनुसार मरेंगे

जिन्हां बाज़ी जित लई अपनी, ओ क्यों दुःख सहन करेंगे

सजनों क्यों दुःख सहन करेंगे

कलुकाल, कलुकाल ने पाया घेरा, जीवां ने पाप किया बहुतेरा

जीवां ने पाप किया बहुतेरा आ हिलया है जे सिंहासन मेरा

दुनिया वाले इन्सान बिगड़ गये बिगड़ गई प्रजा ओ सारी

बिगड़ गया दुनियां दा राजा, बिगड़े ओ खलकत सारी

ओ सजनों बिगड़ गई ओ खलकत सारी

थोड़े दिनां दे अन्दर जगत दी कैसी हालत होणी है

भारत माता खिड़ खिड़ हस्से गी खलकत सारी रोणी है, खलकत सारी रोणी है

कलुकाल, कलुकाल ने पाया घेरा, जीवां ने पाप किया बहुतेरा

जीवां ने पाप किया बहुतेरा आ हिलया है जे सिंहासन मेरा

बोल भारत माता की जय

बोल भारत माता की जय

बोल भारत माता की जय

अब सब सजन अपनी व अपने परिवारों की सत्यता से परखकर सुन्दरता एवं निर्मलता का वातावरण बनाने के लिए आत्मविचार में आ जाना। जान लो आत्मविचार तभी आएगा जब आपके पास आत्मज्ञान होगा अन्यथा ऐसा सम्भव नहीं हो पाएगा क्योंकि आत्मज्ञान के बगैर आत्मसुधार होना नामुमकिन है। इस तथ्य के दृष्टिगत हर सजन को अपने जीवन में आत्मज्ञान प्राप्ति की महत्ता को समझना है और इस हेतु अपने व्यस्त जीवन से समय निकालकर सार्थक कार्यों में लगाना है। फिर कह रहे हैं कि नादान मत बनना अपितु अपने सजन बनना। याद रखो इतना सुनने के पश्चात भी अगर आपकी अक्ल ठिकाने नहीं आती तो आप अपने जीवन के घातक खुद बनोगे। आशय यह है कि यह आत्मघात करने की बात होगी अतः आप ऐसे आत्मघाती मत बनना। याद रखो आत्मघाती वही होता है जो मनमत पर चलता है और शारीरिक स्वभावों के अनुसार जीवन यापन करता है, जो लोभी व लालची होता है, जिसे अधिकाधिक पैसा, धन-दौलत व सम्पत्ति चाहिए होती है और वह उसे प्राप्त करने हेतु किसी का भी निरादर करने से नहीं सकुचाता। ऐसे दुर्मति इन्सान से सबने सावधान रहना है क्योंकि हमारा जीवन अनमोल है, उसके तुल्य और कुछ भी नहीं है। इस बात को समझते हुए अपने जीवन को सुन्दरता, पावनता और पवित्रता का प्रतीक

बनाओ व अक्षय यश-कीर्ति को प्राप्त हो जाओ। अब सब सजन हिम्मत में आकर ऐसा चलन दर्शाना और कामयाब हो जाना।

आप ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित जय सीताराम जी।